रुपये की आत्मकथा

मैं रुपया हूँ। जिसके पास मैं होता हूँ वह धनी कहलाता है जिसके पास मैं नहीं, वह वेचारा गरीब है। तुमने सुन होगा-बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया।

मैं जमीन के अन्दर एक खान में सोया पड़ा था। कुछ लोग वहाँ आए। उन्होंने धरती को खोदकर मुझे बाहर निकाला। उस समय मेरा रूप-रंग पत्थर जैसा था। मुझे मालगाड़ी के डिब्बे में भरकर नासिक भेज दिया गया। गाड़ी से मुझे ट्रक में लादकर माल-गोदाम में पहुँचाया गया।

इसके बाद मुझे बहुत कष्ट दिया गया। छैनियों और हथौड़ियों सेमेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिए। फिर मुझे गर्म कड़ाहे में डालकर तेज आगापर पिघलाया गया। इसके बाद मुझे साँचों में डालकर मशीनों से कुचला, काटा और चमकाया गया।

कष्ट सहन करके ही सम्मान मिलता है। अब मेरी चाँद जैसी चमक दखकर सब खुश हो गए। मेरी मधुर झंकार सुनकर लोग वाह-वाह करने लगे। अब मुझे मेरे साथियों के साथ पेटियों में बन्द करके दिल्ली भेजा गया। यहाँ हमारा बहुत स्वागत हुआ। मुझे तथा मेरे साथियों को सरकारी बैंक के तहखाने में रखा गया। इतने शानदार भवन में रहकर हम इतराने लगे।

एक दिन हमें बाहर निकालकर किसी सेठ को दे दिया गया फिर मैं एक हाथ से दूसरे हाथ में जाने लगा।बालक-बालिकाओं के हाथों पहुंचकर मुझे बहुत खुशी होती है।

मेरे बिना संसार का काम नहीं चल सकता। कुछ भी खरीदना हो तो मेरी आवश्यकता पड़ती है। आजकल मेरे कागजी भाई भी आप आ गए है। पता नहीं लोग उन्हें पसन्द करते हैं या नहीं। मेरी आवाज मधुर है, मेरे कागजी भाई की तो आवाज है ही नहीं! जैसा मैं चमकता हूँ, क्या मेरा कागजी भाई चमक सकता है? फिर भी में अपने कागजी भाई के साथ मेल-जोल से रहने को तैयार हूँ। बस, इतना चाहता हूँ, कि आप उसका अधिक सम्मान न करें।